ੴ सतिगुरु प्रसादि॥

प्रभु बख्शिश

केश

लेखक एवं प्रकाशक

सेवा सिंह (संत)

गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा

डा. गढ़दीवाला, होशियारपुर (पं.) 144207

दूरभाष : 01886-260334

विषय अनुक्रम

1.	केशों की महानता	1
2.	केशों का त्याग करने के कुछ मुख्य कारण	17
	(i) देखा-देखी केशों का निरादर	17
	(ii) सुन्दर बनने के लिए केशों का त्याग	19
	(iii) नवयुवकों के पतित होने में स्त्रियों का योगदान	22
	(iv) विदेश जाने के बहाने केशों को तिलांजली	23
	(v) स्वयं में हीन-भावना	24
3.	प्रचार के ढंगों में परिवर्तन की आवश्यकता	27

© मार्च 2008 5000

केशों की महानता

परमात्मा ने मनुष्य को सिर से पाँव के अंगूठे तक आन्तरिक तथा बाहरी शरीर के अंग-अंग बख्शिश करते हुए रचा, नवाजा और सम्पूर्णता प्रदान की है। सभी अंगों की तरह केश भी परमात्मा की एक बहुमूल्य सौगात तथा शरीर के अंग है। शरीर के आन्तरिक और बाहरी एक अंग का अभाव भी मनुष्य के शरीर को सही प्रचालित करने में अवरोध पैदा करता है तथा शरीर को कुरूप बनाकर मनुष्य में हीनभाव पैदा करता है। जैसे हाथों के बिना व्यक्ति को अपंग, आँखों के अभाव में काना अथवा अन्धा और टाँगों या पाँवों के अभाव में मनुष्य को पंगु अथवा लंगड़ा कह कर संसार में सम्बोधित किया जाता है, वैसे ही सिर के केशों के अभाव में मनुष्य को गंजा तथा दाढ़ी के केशों के अभाव वाले मनुष्य को खोजा[1] अथवा खोदा कह कर पुकारा जाता है। जिस प्रकार प्रभु-प्रदत्त शरीर के किसी भी अंग का अभाव मनुष्य के भीतर उस अंग की कमी तथा समाज में हीन-भाव बना देता है। वैसे ही शरीर के अत्यावश्यक अंग तथा शरीर के सौन्दर्य के प्रतीक केशो के अभाव का अहसास तथा केशों की महत्ता का अनुमान किसी गंजे अथवा खोजे मनुष्य को पूछ कर किया जा सकता है, जो कि शरीर के सभी अंग सम्पूर्ण होने के बावजूद समाज में स्वयं को अधूरा और प्रभु द्वारा श्रापित अनुभव करता हुआ हर समय चिंतित रहता है। खोजा तथा गंजा मनुष्य जहां केश प्राप्ति हेतु परमात्मा के चरणों में अरदास और प्रार्थना करता रहता है, वहाँ हजारों रुपये डॉक्टरों को देकर, दवाइयों का सेवन करके तथा मुख और सिर पर विभिन्न प्रकार की औषधियों का लेप करवा कर केश प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। कई बार अनेक प्रयास करने तथा धन का व्यय करके भी उसे केश प्राप्त करने में सफलता नहीं मिलती।

यहां मैं केशों की कमी के विषय में एक आप-बीती घटना लिखना चाहता हूँ ताकि केशों की महत्ता का पता चल सके। गर्मियों के दिन

1. खोजा (या खोदा) – जिसकी दाढ़ी के बाल कम हों या बिल्कुल न हों।

थे। मैं गुरुद्वारा साहिब (रामपुर खेड़ा) में अपने कमरे में बैठा हुआ था। पठानकोट से दो फौज़ी अफसर, एक मेजर तथा दूसरा कर्नल रैंक का, मिलने के लिए आए।

मेजर साहिब तो मेरे परिचित थे परन्तु कर्नल साहिब अपरिचित थे। मेजर साहिब द्वारा परिचय करवाने के पश्चात् उनको जलपान करवाया। मेजर साहिब गुरुमति के धारणी थे परन्तु कर्नल साहिब ने अपनी दाढ़ी को कटवाया हुआ था।

मेजर साहिब ने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि कर्नल साहिब मेरे मौजूदा अफसर हैं, मेरा कहना तो नहीं बनता परन्तु इनका हितैषी होने के कारण मैं इनके विषय में कुछ कहने जा रहा हूँ। मेजर साहिब ने कहा– ''कर्नल साहिब वाणी भी पढ़ते हैं, वैसे भी धर्म-भीरु हैं, परन्तु साथ ही दाढ़ी की सेवा भी करते रहते हैं (अर्थात् दाढ़ी को काटते हैं) आप इनको अखण्ड स्वरूप रखने की प्रेरणा दीजिए।'' मैंने मेजर साहिब की बात सुनकर उत्तर दिया कि कर्नल साहिब स्वयं समझदार तथा पढ़े-लिखे हैं, अपने हानि-लाभ को समझते हैं। समझदार आदमी को अधिक समझाने और अधिक कुछ कहने के स्थान पर इशारा ही काफी होता है, वह आप ने कर ही दिया है।

अभी यह बात चल ही रही थी कि नीचे लंगर हाल में एक प्रेमी (सेवक), जिसका नाम गुरदेव सिंह था, जिस को देव-देव कह कर पुकारा जाता था, वह लंगर छक रहे (कर रहे) कुछ लड़कों से झगड़ रहा था तथा उनको क्रोध में काफी कुछ कह रहा था। देव (वह पंडोरी निज्जरां गाँव का रहने वाला था, उसकी उम्र 35 वर्ष के लगभग थी। उसके मुख पर दाढ़ी नहीं आती थी अतः उसे *खोजा* कहा जाता था) के लड़ने की आवाज और उल्टा-सीधा कहने के बोल भी मैंने सुन लिए थे और मुझे यह भी पता चल चुका था कि वह बच्चों से क्यों झगड़ रहा है। देव दो-तीन साल से गुरुद्वारा साहिब में ही रहता तथा सेवा किया करता था और अकसर उस का झगड़ा बच्चों से होता रहता था।

एक सेवादार को मैंने आवाज दी और उसे कहा कि देव को मेरे

पास बुला कर लाओ। सेवादार गया और देव को मेरे पास बुला लाया। मैंने देव को सम्बोधित करके पूछा कि तुम बच्चों से क्यों झगड़ते हो ? देव ने उत्तर देते हुए कहा कि देखिए एक तो मैं इन बच्चों को लंगर बाँटता हूँ , दूसरे ये छोकरे मुझे 'बीबी ! दाल दे जाओ', 'बीबी ! प्रसादा दे जाओ' कहकर मजाक करते हैं। आप ही बताएं ! मैं कोई स्त्री (बीबी) हूँ ? मैं तो पहले ही दुर्भाग्यशाली और ईश्वर द्वारा श्रापित हूँ। परमात्मा ने मुझे दाढ़ी प्रदान नहीं की, इसी लिए मेरा विवाह भी नहीं हुआ, मैं न तो पुरुषों में आता हूँ और न स्त्रियों में। ये छोकरे मुझ दुखी को बीबी, बीबी कह कर और भी तंग करते हैं। मैं तो गुरुद्वारों में रह कर, सेवा करके अपने दिन काट रहा हूँ। आप इन्हें समझाइए कि मुझ दुःखी को और दुःखी मत करें। नहीं तो मुझ दुखियारे ने किसी की टांग या बाजू तोड़ देनी है। मैंने यह सारी बात कर्नल साहिब तथा मेजर साहिब के सामने सुनी और देव को कहा कि मैं जब नीचे आऊँगा तो कसूरवार लड़कों को अवश्य सजा दूंगा, तुम शांत रहो। देव को सांत्वना देने पर वह नीचे लंगर हाल में चला गया। देव के वापिस जाने के पश्चात् मैंने कर्नल साहिब को सम्बोधित करके कहा कि कर्नल साहिब ! आपने इस दुखियारे का दुःख सुन ही लिया है। कितने आश्चर्य की बात है कि जिनको प्रभु ने दाढ़ी केश दिये हैं वे प्रभु की बख्शिश दाढ़ी-केशों को रखने के लिए तैयार नहीं, परन्तु जिन को दाढ़ी-केशों की सौगात प्राप्त नहीं हुई वे खोजेपन तथा गंजेपन को प्रभु का कोप बताकर अपने बुरे कर्मों की सजा कह कर पश्चाताप तथा बेबसी का अनुभव कर रहे हैं। आप स्वय ही निर्णय करें कि पौरुष के प्रतीक को अपने हाथों से स्वंय ही क्यों नष्ट कर रहे है। यदि प्रभु हमें दाढ़ी-केश नहीं देता तो हमारी हालत इस देव जैसी ही होनी थी। देव के कथानुसार न तो हम पुरुषों में और न ही स्त्रियों में शामिल होते। कर्नल साहिब समझदार थे, कहने लगे, है तो हमारी गलती और ढील, यूँ ही देखा-देखी यह गलती होती जा रही है और साथ ही उन्होंने यह कहा कि मैं आज से प्रण करता हूँ कि अगली बार जब भी हम आपसे मिलेंगे, तब अवश्य अखण्ड स्वरूप में ही मिलेंगे। आप मेरे लिए अरदास

करना, कि मैं अखण्ड स्वरूप में रहने के लिए पूरा-पूरा प्रयास करूँगा। कुछ समय पश्चात् मेजर साहिब का पत्र मुझे प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने कर्नल साहिब के दाढ़ी रखने का जिक्र करते हुए अत्यंत प्रसन्नता जाहिर की थी। अधिकांशतः मजबूरी बहुत कम होती है, ऐसे नासमझी में देखा-देखी एक दूसरे को देखकर सुन्दर बनने की होड़ में केश कटवाने की अवज्ञा किये जाता है।

केश मनुष्य के जन्म लेने के पश्चात् नहीं लगाए जाते बल्कि जैसे मां के गर्भ में शरीर के सभी अंग अपनी-अपनी नियमित सीमा के अनुसार बनते हैं वैसे ही प्रभु की इच्छा के अनुसार केश भी मनुष्य को माता के गर्भ से ही नियमित सीमा में दिये जाते है। फिर और प्रभु की बहुत आश्चर्यजनक खेल है जैसे कि गुरुवाणी का फरमान है–

पूरे का कीआ सभ किछु पूरा
घटि वधि किछु नाही॥ *सलोक मः १ (पृष्ठ १४१२)*

पूरे अर्थात् सम्पूर्ण प्रभु ने ऐसी सम्पूर्ण रचना बनाई है कि जहा-जहाँ शरीर को बाहर से केशों की आवश्यकता है वहाँ बाहर नियमित लम्बाई में केश पैदा किये हैं। जिन सूक्ष्म अंगों की रक्षा हेतु शरीर के भीतर रोमों की आवश्यकता थी, वहाँ परमात्मा ने शरीर के अंगों के भीतर रोम पैदा किये हैं। जैसे कान के पर्दे पर तथा फेफड़ों पर धूल-मिट्टी जाने से रोकने के लिए नाक तथा कान के भीतर रोम पैदा किये है। पुरुषों के मुख पर दाढ़ी और सिर पर केश परमात्मा ने प्रदान किये हैं परन्तु स्त्रियों को केवल सिर पर ही केश प्रदान किये, यह प्रभु की अपनी इच्छा है। जो अल्प बुद्धि के कारण प्रभु की इच्छा के विपरीत चलता भी है उसको सफलता नहीं मिलती, सारी उम्र केशों को काटने के बावजूद प्रत्येक दिन नए केश पैदा होते ही जाते हैं। प्रभु की इच्छा के समक्ष मनुष्य को ही हथियार फेंकने पड़ते हैं।

परमात्मा ने संसार के हरेक क्षेत्र के मनुष्यों को वहाँ के वातावरण के अनुसार केश दिए हैं। जहाँ अत्यंत गर्मी पड़ती है वहाँ के लोगों को

काले रंग के घुंघराले केश प्रदान किये हैं। सर्द मौसम वाले देशों में भूरे और सफेद केश प्रदान किये हैं ताकि शरीर के आवश्यक अंगों को वातानुकूलित रखा जा सके। परमात्मा ने शरीर में न कोई फालतू अंग लगाया है और न ही कोई कमी रहने दी है। बाबा कबीर जी का फरमान है –

ना कछु पोच[1] माटी के भांडे।

ना कछु पोच कुंभारे ॥२॥ *प्रभाती कबीर जी (पृष्ठ १३५०)*

सम्पूर्ण (प्रभु) के बनाए स्वरूप में यदि अधूरा (मनुष्य) हस्तक्षेप करेगा भी तो उसके हिस्से में केवल प्रभु की अवज्ञा के पापकर्म की सजा और ग्लानि ही आएगी।

गुरुवाणी में परमेश्वर के सगुण स्वरूप को प्रकट करने के लिए श्री गुरु अर्जुन देव जी ने वडहंस राग में परमेश्वर जी को सुन्दर नाक तथा लम्बें केशों वाले स्वरूप का दर्शा कर उस कर्त्ता पुरख की प्रशंसा की है। साहिब जी का फरमान (कथन) है–

[2]तेरे बंके लोइण दंत रीसाला॥

[3]सोहणे नक जिन लंमड़े वाला॥

वडहंसु मः १ (पृष्ठ ५६७)

सतगुरुों ने स्थान-स्थान पर परमात्मा को केसव[4], केसो[5] कह कर उस प्रभु का सुमिरन करने की ताकीद की है। बाबा कबीर जी का फरमान (कथन) है–

कबीर केसो केसो कूकीऐ न सोईऐ असार॥

राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार॥२२३॥

सलोक कबीर जी (पृष्ठ १३७६)

---

1. पोच – कमी
2. हे प्रभु तुम्हारे नयन अत्यंत सुन्दर और दाँत बहुत रसीले हैं।
3. हे प्रभु तुम सुन्दर नाक और लम्बे केशों वाले हो।
4, 5. केशों वाला

आवागमन के चक्र से छूटने के लिए बाबा नामदेव जी ने हमें सुन्दर केशधारी प्रभु के चरणों में विनय करने के लिए निर्देश दिया है–

केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥२॥

धनासरी नामदेव जी (पृष्ठ ६९३)

जहाँ परमात्मा को केशधारी दर्शा कर याद किया और पूजा जाता है वहां परमात्मा की तरफ से संसार को सत्यमार्ग पर अग्रसर करने के लिए जितने भी पीर, पैगम्बर, अवतार, औलिए, ऋषि-मुनि विश्व में भेजे हैं, वे सभी केशधारी थे। मुस्लमानी धार्मिक विश्वास के अनुसार सारे का सारा संसार बाबा आदम की संतान है। बाबा आदम को खुदा ने अपनी सूरत में स्थापित करके अन्य सभी फरिश्तों से बाबा आदम के आगे नमस्कार करवाया। आदम की सूरत के विषय में सभी एकमत हैं कि वे केशधारी थे, आज पता नहीं बाबा आदम की संतान किस मजबूरी के अधीन अपने बुजुर्गों के स्वरूप को तिलांजली देने में क्यों गर्व महसूस कर रही है। एक और बात भी याद रखने वाली है कि बाबा आदम ने तो खुदा के हुकम को केवल एक बार भंग किया जिस के परिणामस्वरूप उन्हें अर्श से फर्श पर आना पड़ा। परन्तु जो (लोग) प्रभु के हुक्म का बार-बार उल्लंघन करते हैं, इस उल्लंघन का फल उन्हें क्या मिलेगा ? यह तो करतार (प्रभु) ही जाने।

गुरुमति के दार्शनिक प्रो. पूर्ण सिंह जी ने अपनी रचना में स्पष्ट शब्दों में अंकित किया है कि केश और ककार क्यों रखने हैं ? कोई दलील या तर्क-विकर्त नहीं, बस, केश और ककार हमें परमात्मा और गुरु की ओर से प्रदान किये गये अमूल्य उपहार है। इन अमूल्य उपहारों को हम अत्यंत प्रेम और सत्कार के साथ संभाल कर रखते हैं क्योंकि यह उसने हमें स्वयं प्रदान किये हैं, जो हमारे सुहाग की निशानी हैं। प्यारे (परमात्मा) द्वारा प्रदत्त सौगातें हमें प्यारी लगती हैं।

पुराने समय में तो ब्राह्मणों को प्राणदण्ड के बदले में उनका सिर और मुख मूंड कर, प्राणदंड से भी अधिक सजा दी जाती थी।

मूडयं प्राणाति को दंडो ब्रह्मणसस विधियते॥

मःसिःधिः ४ श्लोक ३६९

परन्तु आज प्राणदंड के बिना ही अपनी जेब से पैसे खर्च कर सिर-मुँह मुंडवाए जाते हैं। किस मजबूरी के कारण इतनी बड़ी सजा के भागीदार बना जा रहा है, यह सिर-मुँह मुंडवाने वाले ही बता सकते हैं। सतिगुरु कलगीधर जी ने तो प्रभु-बख्शिश केशों को अपनी मुहर बताकर अखण्ड स्वरूप (साबुत सूरत) में रहने की ताकीद की है–

ੴ सतिगुरु जी सहाए

सरबत[1] संगत काबल गुरु रखेगा। आप पर हमारी बहुत खुशी[2] है। आप खंडे का अमृत पाँचों से लें। केश रखें, ये हमारी मुहर हैं। कछ[3] कृपाण का विसाह[4] नहीं करना। सर्बलोह का कड़ा हाथ रखना। दोनों वक्त केशों की पालना[5] करनी। सरबत संगत अभाखिआ का कुठा[6] खावे नाही। तम्बाकू नाही सेवना। भादनी[7] तथा कन्या की हत्या करने वाले से मेल-जोल न रखे। गुरबाणी पढ़नी, वाहिगुरु वाहिगुरु जपना गुरु की रहित रखनी॥

'हुक्मनामा काबल की संगत प्रति'

भाई मरदाना जी को जब उनके सुपुत्र नूर ने पूछा कि ''अब्बा जान! आप सारी उम्र वली अल्ला बाबा नानक जी की हुजूरी (सेवा में) में रहे हैं, इसलिए मुझे भी कोई शिक्षा दीजिए।'' तो भाई मरदाना ने कहा, ''तीन बातें तुम करो। एक सिर पर केश रखना दूसरा रात के पिछले पहर सतिनामु का जाप करना, तीसरा यह कि आती जाती साध-संगत की सेवा-सुश्रूषा करना।'' तीनों वचन नूर ने मान कर पिता और परमात्मा की खुशी प्राप्त की।

बीसवीं शताब्दी के महान् विद्वान् और लोकप्रिय लेखक जिसने सारी मनुष्यता का इतिहास बीस ग्रन्थों (प्रतियों) में लिखा। उस मिस्टर ट्यानबी को एक अमरीकन औरत ने एक बार पूछा कि आप ने संसार के सभी लोगों के विषय में खोज की है और एक-एक सम्प्रदाय तथा विभिन्न

---

1. समस्त 2. प्रसन्नता 3. कछहिरा 4. कभी त्याग नहीं करना 5. कधें से सफाई करनी 6. मुस्लमानी ढंग से मारा हुआ जीव 7. सिर मुंह मुंडवाने वाला।

जाति के व्यक्ति से मिले हैं। आपने उनके विभिन्न रीति-रिवाजों और धार्मिक दर्शन को भी जाना, समझा और उनके विषय में लिखा है। क्या आप बता सकते हैं कि संसार में सबसे सुन्दर मनुष्य कौन है ? मि. ट्यानबी ने एकदम उत्तर दिया, खुली दाढ़ी वाला पूर्ण गुरसिख। प्रश्नकर्त्ता औरत मि. ट्यानबी का उत्तर सुनकर हैरान हुई और साथ ही एक अन्य प्रश्न पूछा कि यह भी बता दें कि विश्व में सबसे बदसूरत इन्सान कौन है ? मि. ट्यानबी ने उस स्त्री के प्रश्न के उत्तर में कहा कि वह सिक्ख बदसूरत है जिस ने अपने केश और दाढ़ी मुंडवा दी है।

इस ईश्वरीय सौन्दर्य और बख्शिश की खातिर ही सतिगुरों तथा गुरु के सिक्खों ने अपने शरीर पर असह्य और अकथनीय कष्ट सहे परन्तु अखंड सूरत (स्वरूप) को तिलांजलि नहीं दी। पाँच और सात वर्ष के बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह जी ने जीवित नींव में चिनवाएं जाने की सजा को हँसते-हँसते स्वीकार करके सिक्खी-केशों को साँसों के साथ निभाया। इसी अखंड सूरत की खातिर भाई तारू जी ने खोपड़ी उतरवाई, भाई मनी सिंह जी ने अंग-अंग कटवा लिया, भाई मती दास जी ने तन को दो हिस्सों में कटवाया, भाई दियाल दास जी को देग में उबाल दिया, भाई शबेग सिंह, भाई शाहबाज सिंह जी ने चरखी पर चढ़ना स्वीकार कर लिया पर अखंड सूरत को भंग नहीं होने दिया। इस पूर्ण स्वरूप की खातिर ही स्त्रियों ने मीर मन्नू की जेल में सवा-सवा मण अनाज चक्की में पीसा, बच्चों के टुकड़े कटवा लिए, पर धर्म नहीं हारा।

इस अखंड सूरत की खातिर हमारे बुजुर्गों ने घरों के सुख-आराम त्याग कर, जंगलों में भूखे-प्यासे रह कर दिन काटना तो स्वीकार कर लिया पर ''[1]साबत सूरत रब दी भने बेईमान'' के भागीदार नहीं बने। बल्कि प्रभु बख्शिश केशों का अंतिम सांस तक साथ निभाया। इस प्रकार के धैर्यवानों की तरफ संकेत करते सतिगुरों जी ने वचन दिया था कि–

1. प्रभु बख्शिश पूर्ण स्वरूप को जो मनुष्य भंग करता है, वह बेईमान है।

इन पुत्रन के शीश पर वार दीए सुत चार॥

चार मुए तो क्या हुआ जीवत लाख हजार॥

सतिगुरु जी ने अपने बिंदे लखते जिगर पुत्रों को हम पर कुर्बान करके हमें अपने नादी पुत्र बनाया था। आज हम बाबा फरीद जी के कथन अनुसार–

आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करि देखु॥६॥

सलोक फरीद (पृष्ठ १३७८)

का कर्म करना है। क्या हम आज गुरु के पुत्र-पुत्रियां बन गए हैं ? क्या हमारे नयन-नक्श बाबा अजीत सिंह, बाबा जुझार सिंह, बाबा जोरावर सिंह, बाबा फतेह सिंह तथा कलगीधर जी से मिलता-जुलता है ? जिनका स्वरूप गुरु जी से मिलता है, जो गुरु के आदर्शों और असूलों को धारण किये हुए हैं, उनके समक्ष सिर झुकता है।

जो गुरु द्वारा प्रदान सिद्धांतों तथा प्रभु-स्वरूप को तिलांजलि दे रहे हैं उनको अपने हृदय में झांक कर अपनी आत्मा की पड़ताल करने की आवश्यकता है कि जिस मार्ग को हमने अपना लिया है, क्या यह हमारे लिए लाभदायक है अथवा नुकसानदायक है ?

हमने अपने भले-बुरे के विषय में सोचना है, देखा-देखी भेड़-चाल को धारण नहीं करना। हमें गुरु द्वारा प्रचालित मार्ग को धारण करना है, सतिगुरु हमें आवाजें लगा-लगा कर सावधान कर रहे हैं कि–

गुरसिख मीत चलहु गुर चाली॥

जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली॥१॥ रहाउ॥

धनासरी मः ४ (पृष्ठ ६६७)

को धारण कीजिए। व्यर्थ ही दुनिया के पीछे चल कर अपने लोक परलोक को मत बिगाड़ें। बाबा कबीर जी के कथानुसार अपने पाँव पर स्वयं कुल्हाड़ा मार कर मूर्ख और गाफिल मत बने। बाबा जी का फरमान सुनिए और हृदय में बसाइए–

कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि॥
पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि॥३॥

सलोक कबीर जी (पृष्ठ १३६९)

गाफिल और मूर्खों को लोग सदा नफरत से ही देखते हैं, कोई भी उन्हें अच्छा नहीं कहता। समझदार वह है जो गुरु-पीर और समझदार (व्यक्ति) की शिक्षा को धारण करता है। अखंड स्वरूप की कितनी अलौकिकता है, फायदा है, जिस मनुष्य के सिर पर केश और दस्तार सुशोभित हो, मुख पर सुन्दर दाढ़ी हो, ऐसे अखण्ड स्वरूप धारी मनुष्य को सभी 'सरदार जी' कह कर सम्बोधित करते हैं। यद्यपि वह किसी भी जाति अथवा राष्ट्र से सम्बन्धित हो। केश-दाढ़ी और दस्तार की बदौलत विश्व का प्रत्येक मनुष्य उसको 'सरदार जी' कह कर आदर से बुलाता है। दूसरी तरफ अखंड सूरत से रहित मनुष्य यद्यपि कितना भी अमीर और उच्च जाति का क्यों न हो, उस को हबाबू जी', 'भइया जी', या 'चौधरी' ही कहा जाएगा। वह कभी भी 'सरदार' नहीं कहला सकता।

सरदार केवल गुरु का अखण्ड स्वरूपधारी सिक्ख ही कहला सकता है क्योंकि सतिगुरु ने जातीयाभिमानियों तथा राजाओं का त्याग करके हम जैसे निमाने (सम्मानहीन), निताने (निस्त्राण) और गरीबों को अपने पुत्र बना कर सरदारियाँ प्रदान कीं और वचन किये थे–

जिन की जाति गोत कुल नाही॥
सिरदारी नह भई किदांई॥
इनही को सिरदार बनाऊ॥
तबै गोबिन्द सिंघ नाम कहाऊ॥

सतिगुरु ने तो बख्शिश के भंडार खोल कर खुले हाथों से सरदारियाँ का दान बख्शिश किया परन्तु हमने अपने झोली (आंचल) ही संकुचित कर ली है और सरदारियां लेने के लिए तैयार नहीं है। इससे अधिक बदकिस्मती हमारी और क्या हो सकती है ? प्राचीन गुरुसिख तो इन रोमों से रसना (जीभ) का काम लेकर –

गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै॥

रामकली महला १ (पृष्ठ ९४१)

का कर्म करके अपने स्वामी ईश्वर से एक रूप (लीन) होते थे परन्तु आज हमने इन रसना रूपी रोमों को नष्ट करने का संकल्प कर लिया प्रतीत होता है जो कि आत्मिक तौर पर अत्यंत नुक्सानदायक और हानिकारक है। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सिक्खी की पाँच निशानियां दर्शा कर हुक्म किया है कि केशों के बिना बाकी चार प्रतीक मूल्यहीन या व्यर्थ हैं। केशों के साथ ही बाकी प्रतीक शोभायमान होते हैं। आप जी का फरमान है–

निशाने सिक्खी ई पंज हरफि काफ़॥
हरगिज न बाशद ई पंज मुआफ॥
कड़ा कारदो कछ कंघा बिदां॥
बिना केश हेच अस्तु जुमला निशा॥

कलगीधर जी के ऐतिहासिक हुक्म जिस को कवि सेनापति जी ने अपनी कलम से अंकित किया है कि गुरु का सिक्ख कभी भी दाढ़ी और केश नहीं मुंडवाए। तम्बाकू आदि नशों का पूर्ण त्यागी बनें, यही सफल जीवन जीने के लिए उचित मार्ग है–

सीस न मुण्डावे मीत हुक्का तजि भली रीत॥
मन मैं करि प्रेम प्रीति संगति मैं जीईए॥१॥१९६॥

श्री गुरु शोभा (अध्याय ६)

हुका नहीं पीवे सीस दाढ़ी न मुंडावै
सो तो वाहिगुरु गुरु जी का खालसा॥३०॥४६॥

श्री गुरु शोभा ग्रंथ (अध्याय ५)

पुन संग सारे प्रभु जी सुनाई॥
बिना तेग तीरं रहो नाह भाई॥
बिना शस्त्र केसं नरं भेड जानो॥
गहे कान ता कौ कितै लै सिधानो॥९८॥

इहै मोर आगिआ सुनो लै पिआरे॥
बिना तेग केसं दिवो न दीदारे॥
इहै मोर बैना मनेगा सु जोई॥
तिसै इछ पूरं सभै जान होई॥९९॥

गुरु बिलास पा. १० (अध्याय २३)

सतिगुरु ने केशों को तथा शस्त्रों को बहुत महानता दी है क्योंकि केश ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक हैं। जो केशों की अगम्य शक्ति का ज्ञाता हो जाता है, वह कभी भी केशों का बुरा नहीं करता। प्राचीन ऐतिहासिक काजओन किताब में सैमसन की गाथा लिखी है कि जरह के नागरिक मनूहा नामक पुरुष के घर एक लड़का पैदा हुआ, जिस का नाम सैमसन रखा गया। सैमसन बहुत बहादुर और शक्तिशाली था। यहाँ तक कि इसने कई शेरों के मुँह (जबाड़े) अपने हाथों से फाड़ दिये। एक हजार से अधिक शत्रु जो सैमसन पर धावा बोलने आए थे, सैमसन ने एक गधे की हड्डी से ही उन्हें मार भगाया था। सैमसन ने फलस्तीनियों को बुरी तरह मारा। फलस्तीनी सैमसन से बहुत दुखी थे। सैमसन का एक स्त्री से प्रेम हो गया। जिसका नाम डलेला था। फलस्तीनियों ने डलेला को काफी लालच देकर कहा कि वह सैमसन को अपने प्यार के वश में करके उससे उसके बहादुर और शक्तिशाली होने का कारण पूछे। डलेला ने सैमसन को अपने प्यार के वश में करके उससे उसकी बहादुरी का रहस्य पूछा। डलेला के पूछने पर उत्तर में सैमसन ने बताया कि मेरे सिर पर कभी भी उस्तरा नहीं फिरा, इस लिए मैं अपनी मां के पेट से ही खुदा के समान हूँ। यह सारी शक्ति मुझमें तब तक रहेगी जब तक मेरे रोम पूरे रहेंगे। जब किसी कारण मेरा सिर मूंड दिया गया, उसी समय मेरे भीतर में दैवीय शक्ति चली जाएगी और मैं शक्तिहीन हो जाऊँगा। यह सारा रहस्य डलेला ने सैमसन के दुश्मनों को बता दिया। दुश्मनों ने, उस स्त्री डलेला द्वारा धोखे से उसके केश काटने का षड्यंत्र रचा। उस स्त्री ने

सैमसन को अपनी जांघ पर सुलाए रखा और आदमी बुलवा कर सैसमन का सिर मुंडवा दिया, केश काटे जाने के कारण सैमसन शक्तिहीन हो गया और उसका दैवीय बल जाता रहा। उधर शत्रुओं ने सैमसन पर धावा बोल दिया। डलेला बोली ए सैमसन ! फलस्तीनी तुम तक पहुँच गए हैं। वह जागा और पहले की तरह ही बाहर जाने लगा। वह नहीं जानता था कि खुदा द्वारा प्रदत्त (केशों का बल) उससे छिन चुका है और वह शक्तिहीन हो चुका है। फलस्तीनियों ने उसे पकड़ लिया। उसकी आँखें फोड़ दीं और अजा में ले आए। पीतल की जंजीरों से बांध कर उसे जेल में डाल दिया, जहाँ वह सारी उम्र चक्की पीसता रहा।

इसी कारणवश ही सारा हिन्दुस्तान करोड़ों की जनसंख्या के बावजूद भेड़ों के झुंड की तरह सदियों तक गुलामों का जीवन व्यतीत करता रहा। जिस का भी दिल चाहता, कोई गजनी से, कोई काबुल-कन्धार से, हजारों की संख्या में सिपाही लेकर हिन्दुस्तान की प्रजा को पैरों तले रौंदता हुआ दिल्ली तक जाकर कब्जा कर लेता और वापिस जाते समय, मन पसंद दौलत और बहु-बेटियों के झुंड बना कर अपने देश ले जाता रहा और गजनी की मंडियों में पशु की तरह बहु-बेटियों को दो-दो टकों में बेचा जाता। किसी सिर मुंडवाए की इन जालिमों के सामने खड़े होने की भी हिम्मत नहीं होती थी।

यह केशधारी खालसा ही था जिस ने इनके दांत खट्टे किये। वे दर्रे-खैबर जैसे मार्ग जहाँ से ये लुटेरे हिन्दुस्तान की दौलत तथा इज्जत लूटने आते थे, खालसे ने सदा के लिए बन्द कर दिये। केवल मार्ग ही बन्द नहीं किये बल्कि केशधारी खालसे ने इन पर राज्य भी किया और इन बलवानों से बेगार भी करवाई और टैक्स (कर) लिए। हिन्दु बहु-बेटियों को इनके पंजों से आजाद करवा कर घरों तक पहुँचाया। यह शूरवीरता और बहादुरी केवल केशधारी खालसे को ही नसीब हुई, किसी अन्य को ऐसा सम्मान प्राप्त नहीं हुआ।

इंग्लैंड में एक विश्व प्रसिद्ध लेखक हुआ है, जिसका नाम मि. बर्नाड शॉ था, एक दिन वह अपनी हजामत कर रहा था। पास ही बर्नाड शॉ का छोटा पुत्र अपने पिता को अपनी दाढ़ी की शेव करते देख रहा था। बर्नाड शॉ के पुत्र ने स्वाभाविक रूप में अपने पिता को कहा कि– डैडी जी ! मेरे शिक्षक ने बताया है कि बड़े-बड़े लेखक, दार्शनिक और प्रबुद्ध व्यक्ति अपनी दाढ़ी और केशों को प्रकृति का सुन्दर उपहार समझ कर संभालते हैं। क्या आप बड़ा व्यक्ति या दार्शनिक नहीं बनना चाहते ? क्या आप प्रकृति के खिलाफ जाना चाहते हैं ? भोलेपन में बर्नाड शॉ के पुत्र के कहे हुए शब्दों ने बर्नाड शॉ पर ऐसा असर किया कि उसने शेव करने वाला सारा सामान उठा कर खिड़की से बाहर फैंक दिया और सदा के लिए प्रकृति के अनुसार चलने का प्रण किया। सारी उम्र अखंड सूरत रख कर विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक-लेखक बन कर अपनी प्रसिद्धि बनाए रखी।

बहुत बार संसार में ऐसा भी होता है, कि कई वस्तुएँ कीमती तो अवश्य होती हैं पर उन के गुणों से अनभिज्ञता के कारण मनुष्य उनका मूल्य नहीं डालता बल्कि अवज्ञा कर बैठता है। इसीलिए बाबा कबीर जी ने गुरवाणी में फरमान किया है–

नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु॥२३॥

सलोक कबीर (पृष्ठ १३६५)

परन्तु जिस (व्यक्ति) को परमेश्वर ने मूल्यवान् वस्तु की परख और गुणों की सूझ-बूझ प्रदान की है, वह उस वस्तु की कद्र भी करता है और मूल्यवान् समझ कर उसे संभाल कर भी रखता है।

केशों के मूल्य से परिचित थे – पीर बुद्धु शाह, जिन्होंने भंगाणी के युद्ध में सतिगुरु जी का साथ दिया। भंगाणी के युद्ध में पीर बुद्धुशाह के दो युवा पुत्र और सैंकड़ों मुरीद (सेवक) शहीद हो गये। युद्ध जीतने के पश्चात्, जब सतिगुरु जी पाऊंटा साहिब की पाक-पवित्र जमीन पर पधारे, साहिब जी ने दरबार लगाया और सिंहों की शूरवीरता की प्रशंसा

की तथा सभी को यथा योग्य दान-भेंटें दीं। पीर बुद्धुशाह जी की कुर्बानी भी साहिब जी की दृष्टि में स्वीकृत हो चुकी थी। सतिगुरु जी ने पीर बुद्धु-शाह को पास बुलाया, प्यार दिया, आशीशों से उसकी झोली भरी और वचन किये– पीर जी ! आप जी की बहुत बड़ी कुर्बानी है, आप कुछ मांगे। पीर जी की आँखों में आँसू आ गये तथा गला प्यार से भर गया, उसने हाथ जोड़ कर साहिब जी के चरणों में नमस्कार करके प्रार्थना की ; पातशाह ! यदि कृपा करनी है तो अपने मुबारक केश-कंघे सहित मुझे प्रदान कर दे, ताकि मैं इन केशों में से सदैव आपके दर्शन करता रहूँ। सतिगुरु जी ने कृपा कर पीर बुद्धु शाह की माँग पूरी की, जिसे पीर जी ने सोने की डिबिया में सादर-अदब सहित जीवन पर्यन्त रखा।

आप (पीर बुद्धुशाह) हमेशा अमृत समय उठकर, शौच-स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरु द्वारा प्रदान किये, साहिब जी के कंघे तथा केशों के दर्शन करके, इन गुरु-प्रतीकों में से अपने स्वामी के दर्शन करके आनंदित होते।

केशों की कद्र थी– भाई नन्द लाल जी को, जिन्होंने शाही दरबार की नौकरी त्याग कर प्रभु-बख्शिश अखण्ड स्वरूप को सांस रहते निभाने के लिए साहिब कलगीधर जी की शरण ली, और गुरु हुक्म में सेवा करके गुरु-दृष्टि में स्वीकृत होकर सिंह स्थापित हुए और अपना जीवन सफल किया। भाई नन्द लाल जी को कलगीधर जी के एक केश की तार में दीन-दुनिया बंधी हुई नजर पड़ी और एक अमूल्य केश का मूल्य दो जहान की दौलत भी कम प्रतीत हुई–

दीन दुनियाँ दर कमंदे आं परी रुखसारि मा॥
हर दो आलम कीमते यक तारि मूए यारि मा॥

(गजल -२, भाई नन्द लाल जी)

केशों की कद्र थी भाई तारू सिंह जी को, जिन्हों संसार के सुख-आराम, धन-दौलत तथा उच्च पद ग्रहण करने से इंकार करके नवाब जकरियाँ खान को कह दिया था कि ऐ खान ! मैं अखण्ड स्वरूप का त्याग

करके इस्लाम धर्म को कदाचित स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि जिस धर्म को स्वीकार करने से खुदा के कोप का सामना करना पड़े और मनुष्य परलोक में सजा का भागीदार बने, ऐसे धर्म को मैं कभी भी धारण नहीं करूँगा, चाहे मुझे तुम अपना सारा राज-पाट भी क्यों न दे दो।

आगे से जकरियाँ खान ने क्रोध से भाई तारू सिंह जी को कहा कि क्या इस्लाम धर्म धारण करने से मनुष्य सजा का भागीदार बनता है ? तब भाई तारू सिंह जी ने दलील के साथ उत्तर दिया, खान जी ! यदि आप कोई बगीचा लगाएँ या कोई इमारत बनाएँ, जो आपकी लगाई हुई बगीची को, निर्मित की हुई इमारत को तोड़ दे तब आप उससे कैसा सलूक करेंगे ? जकरिए ने गुस्से में आ कर रौब से कहा, कि जो मेरी लगाई बगीची को या इमारत को नुक्सान पहुँचाएगा, मैं उसको दंडित करके सदा के लिए जेल की कालकोठरी में बन्द कर दूँगा। भाई तारू जी मुस्कुराए और खान को कहने लगे कि जो खुदा द्वारा निर्मित किये गये अखण्ड स्वरूप को नष्ट करेगा, क्या खुदा उसे दंडित नहीं करेगा ?

जकरिया खान ने जब भाई तारू सिंह जी के मुख से सच्चे शब्द सुने तथा निरुत्तर हो शर्मिन्दा हुआ तो क्रोध में भरकर भाई तारू सिंह जी के अखण्ड स्वरूप को समाप्त करने का आदेश सुनाया, भाई तारू सिंह जी की दृढ़ता फलीभूत हुई। आपके केश लोहे की तारों की तरह कठोर हो गये, जिन्हें कैंची भी काट नहीं सकी। शर्मिंदा होकर खान ने जल्लाद मोची को बुलाकर आप जी की खोपड़ी सिर से जुदा कर देने का आदेश दिया। भाई तारू सिंह ने इस असह्य दुख को सहते हुए अपने दृढ़ निश्चय को पूरा करके, सतिगुरु जी के वचनों की कमाई करके ईश्वरीय आनंद प्राप्त किया परन्तु अखण्ड स्वरूप में विघ्न नहीं पड़ने दिया।

शरीर के अभिन्न अंग और प्रभु द्वारा प्रदान अखण्ड स्वरूप को मनुष्य तिलांजलि क्यों दे रहा है ? इसके पाँच के लगभग बड़े कारण देखने में आते हैं–

केशों का त्याग करने के कुछ मुख्य कारण

1. देखा-देखीं केशों का निरादर

साधारणतः देखने में आता है कि संसार के अधिक खेल (काम) भेड़चाल में ही चल रहे हैं। कोई अपवाद ही अंगुलियों पर गिने जाने वाले इन्सान होंगे जो अपनी समझ और सोच का प्रयोग करके, अपनी लाभ-हानि का लेखा-जोखा करके, अपने नित्यप्रति के जीवन को परिचालित करते होंगे, नहीं तो देखा-देखी और प्रतियोगिता में ही सारा संसार चल रहा है– ''जिधर गाँव का इकट्ठ उधर बन्तों की बछड़ी'' वाली सच्चाई व्याप्त हो रही है। परन्तु याद रखें देखा-देखी अथवा भेड़चाल में चलने के कारण ही बहुत सी दुःख तकलीफें और नुक्सान मनुष्य उठाने लगता है। मिसाल के तौर पर जमींदारों की तरफ देख लें। यदि कुछ जमींदारों ने आलू की फसल लगाई, बाकी सभी ने भी अन्य फसलों का त्याग करके कीमती बीज लेकर आलू ही लगा दिये तो अधिक फसल होने से जमींदारों को लाभ तो क्या होना था बल्कि खाद और बीज के खर्चों से भी हाथ धोना पड़ गया। बिल्कुल इसी तरह लगभग दस वर्ष पूर्व लोगों ने पापूलर के वृक्ष लगाने आरंभ किये, देखा-देखी प्रतियोगिता में सभी जमींदारों ने पापूलर के वृक्ष लगाकर सारे खेत भर दिये। अपनी समझ से काम नहीं लिया और न ही भविष्य के बाजारभाव का लेखा-जोखा ही किया। परिणाम यह निकला कि पापूलर की फसल जलने वाले ईंधन के भाव बिकी, जिससे व्यापारियों की तो चान्दी हुई और जमींदारों के सिर कर्ज चढ़ गया। पापूलरों के बाद सफैदों का भी यही हाल हुआ। कारण केवल भेड़चाल। देखने में आया है कि बिना सोच-विचार किये आज तक किसी को भी अन्धाधुंध प्रतियोगिता के कारण सफलता नहीं मिली और न ही मिलेगी ही।

यदि शादी-विवाह की तरफ देखें, एक दूसरे की देखा-देखी एक ने दूसरे से अधिक खर्च कर दिया। दूसरे ने तीसरे से अधिक। मनुष्य एक-

दूसरे की नकल करता हुआ। कर्जदार होकर सदा के लिए अपना वित्त (दौलत) हार जाता है।

याद रखें, नकल करने वाला मनुष्य अपने जीवन में कभी सफल नहीं होता, पश्चाताप् अवश्य है। जीवन में सफलता सोच-विचार से काम लेने वाले तथा अपनी लाभ-हानि देखकर चलने वाले को ही प्राप्त होती है।

आधुनिक समय में हमारे बच्चे-बच्चियाँ फिल्म अभिनेताओं की, लच्चर (घटिया) गीत गाने वालों की, चरित्रहीन होकर तरह-तरह के वेश धारण करके, स्टेजों पर नंगेपन का प्रदर्शन करने वालों की नकल करके उनके जैसे लिबास पहनने लग पड़े हैं और उनके जैसी सूरत बना कर अपने आप में हीरो बने हुए महसूस कर रहे हैं।

घटिया गीत गाने वालों ने और अभिनेताओं ने अथवा शरीर के नंगेपन का प्रदर्शन करने वालों ने तो धन की खूब कमाई की परन्तु उनकी नकल करने वालों के हिस्से क्या आया ? हिस्से आया अखण्ड सूरत (स्वरूप) का भंग होना, हिस्से आए विकार और विकार प्रवृत्ति, हिस्से आई चरित्रहीनता, हिस्से आई गुरु की नाराजगी।

यदि नकल करनी ही है तो नकल करो अपने से अधिक समझदार की, नकल करो उच्च-चरित्रवानों की, नकल करो इज्जदारों की, नकल करो भाई तारू सिंह जी की, नकल करो भाई मती दास, भाई दियाला दास जैसे योद्धाओं की जिनको आज भी सारा विश्व नमन करता है और सदा के लिए करता रहेगा। परन्तु आज हालात इस प्रकार के बन गये हैं– ''**धरमु पंख करि उडरिया**'' *वार माझ की सलोक मः 1 (पृष्ठ १४५)* की सच्चाई का प्रसार हो रहा है। ''**सरमु धरमु दुंइ छपि खलोए कुडु फिरै परधानु वे लालो**'' का व्यवहार हो रहा है। अज्ञानता कहे अथवा दूरदर्शिता की कमी, या बे-समझी का बोल-बाला कहें, ऐसे वातावरण में ग्रस्त नवयुवक–

कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि॥
पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि॥१३॥

सलोक कबीर जी (पृष्ठ १३६५)

का कर्म कर रहे हैं। नवयुवक फैशनपरस्ती की मृगतृष्णा में ऐसे फँसे हुए है कि निकलने का कोई मार्ग नहीं दिखाई दे रहा। नवयुवक लड़के-लड़कियों का वेश धारण करके स्त्रियाँ बनने के लिए बेसब्र हो रहे हैं और लड़कियाँ तरह-तरह के मर्दाना वेश धारण करके नवयुवकों का स्थान लेने के लिए जल्दबाजी में हैं–

आपो धापी हैरत हूसे॥

वाली सच्चाई साकार हो रही है, कारण क्या है ? टैलीविज़न का प्रभाव, बुरी संगति, अज्ञानतावश एक-दूसरे की नकल, गुरु-उप देश को तिलांजलि।

ये बुराइयाँ तब तक दूर नहीं होंगी जब तक हम स्वयं गुरु-शिक्षा के प्रकाश में अपना फायदा-नुक्सान सोच कर अज्ञानतावश हो रही नकल का त्याग नहीं करेंगे। बुरी संगति को तिलांजलि नहीं देंगे, टैलीविजन पर आचरणहीन कार्यक्रमों का त्याग नहीं करेंगे, तब तक इस बुराई की दलदल से नहीं निकल सकेंगे। यदि निकलना चाहते हैं तो गुरु महाराज जी का आश्रय लेकर सत्प्रयास करें। गुरु अवश्य हमारा भला करेगा। हमारी बर्बाद हो रही विरासत और जीवन सार्थक हो जाएगा।

2. सुन्दर बनने के लिए केशों को तिलांजलि

सारी मनुष्य जाति अपनी शक्ल-सूरत द्वारा आपने सौन्दर्य का प्रदर्शन संसार में करना चाहती है क्योंकि जब मनुष्य संसार में जन्म लेता है, माया के प्रभाव के कारण प्रत्येक पुरुष और स्त्री के मन में दो बातें ऐसी दृढ़ हो जाती हैं जो सारी उम्र मनुष्य के दिमाग से नहीं निकलतीं।

प्रथम बात यह है कि मैं सभी से समझदार और अक्लमंद हूँ। हरेक अल्पबुद्धि मनुष्य भी बाकी सभी से स्वयं को समझदार समझता है और अन्यों को सदैव अक्ल सिखाने का प्रयत्न करता है। यदि अल्पबुद्धि मनुष्य को कोई समझदार व्यक्ति शिक्षा दे भी, तो भी वह शिक्षा ग्रहण करने के स्थान पर क्रोधित होकर उसका विरोध करता है ; क्योंकि उसके मन में यह बात दृढ़ हो चुकी है कि मैं ही सभी से समझदार और अक्लमंद हूँ।

दूसरी बात यह कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं को सुन्दर मान कर, और भी सुन्दर बनने का प्रयत्न करता है। सुन्दर बनने की लालसा में कभी मनुष्य शीशे के सामने खड़े होकर, मेक-अप करने के लिए तरह-तरह की क्रीमें, पाउडर तथा रंगों का प्रयोग करता है। कभी प्रभु द्वारा प्रदान किये सौन्दर्य के प्रतीक केशों को तरह-तरह के रंग लगा के उनका रूप परिवर्तित करता है। कभी कैंची और उस्तरे के साथ रोमों को काट-छांट देता है। मनुष्य की मानसिकता यहाँ तक गिर जाती है कि आँखों के बाल (भौंहें) भी उस्तरे-ब्लेड की मार से अछूते नहीं रहते और मनुष्य जाति सुन्दर बनते-बनते और भी कुरूप और भयानक बन जाती है। इतना कुछ करने के बाद भी मनुष्य को चैन नहीं आता और सुन्दर बनने की दौड़ में मनुष्य नाक-कान भी बेध लेता है। परन्तु मन फिर भी सन्तुष्ट नहीं होता। मनुष्य की सुन्दर बनने की दौड़ वृद्धावस्था तक भी पीछा नहीं छोड़ती। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के कथानुसार– **''सिरु कंपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन''** वाली अवस्था भी आ पहुँचती है परन्तु मनुष्य इस अवस्था में भी कई बार काले रंग की तरफ देखता और बुढ़ापे को काले रंग की चादर के आवरण के नीचे छुपाने का प्रयत्न करता है पर विफल होकर कर एक दिन प्रकृति के आगे इसे पराजित होना ही पड़ता है। आखिर पश्चाताप् की ठंडी आहें भरते इसको इस संसार से आगामी सफर के लिए चलना पड़ जाता है। उस समय बाबा फरीद जी के वचन बिल्कुल साकार होते प्रतीत होते हैं–

फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु॥
कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु॥१४॥

सलोक फरीद जी (पृष्ठ १३७८)

वाली अवस्था बन जाती है।

याद रखें ! मनुष्य के पाँच तत्वों से निर्मित शरीर कभी भी सुन्दर नहीं बन सकता क्योंकि शरीर तो मल, रक्त मज्जा, हड्डियों का मिश्रण है। इन तीनों को चमड़ी की चादर के आवरण में प्रकृति ने लपेटा हुआ है, ये सभी

अपवित्र हैं। यदि सुन्दर बनना है तो आत्मा को सुन्दर बनाए, गुरु के मार्ग पर चलो और आत्मा को संवारो। जो 'निज' को संवार लेता है, बाबा फरीद जी आश्वासन देते हैं कि 'निज' को संवारने वाले मनुष्य से सौन्दर्यवान् प्रभु का मिलन हो जाता है। प्रभु-मिलन से मनुष्य सदा सुखी और सुविधा वाला जीवन व्यतीत करता है–

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ॥

बाबा फरीद जी (पृष्ठ १३८२)

गुरु-दृष्टि में वह मनुष्य सुन्दर नहीं जो तरह-तरह के रंगों से अपना रूप बनाता है। गुरु की दृष्टि में वह भी सुन्दर नहीं जो कैंची और ब्लेड से प्रभु द्वारा प्रदान किये रोमों की बे-अदबी करता है। गुरु की दृष्टि में वही सुन्दर है, जो सदैव परमात्मा की याद अपने हृदय में बसा कर सतसंगत में नाम की दौलत एकत्रित करता है। साहिब जी कहते हैं–

सेई सुंदर सोहणे॥ साघसंगि जिन बैहणे॥
हरि धनु जिनी संजिआ सेई गंभीर अपार जीउ॥3॥

(माझ मः ५ (पृष्ठ १३२)

और –

सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह हरि हरि नामु विसाहा[1]॥२॥१०॥

देवगंधारी मः ५ (पृष्ठ ५३०)

जरूरत है लोगों की दृष्टि में सुन्दर बनने की अपेक्षा गुरु की दृष्टि में सुन्दर बनें। मात्र शरीर को संवारने की अपेक्षा आत्मा को संवारे। जो परमात्मा ने शक्ल-सूरत हमें प्रदान की है, इस की काँट-छाँट करके हम कुरुप तो अवश्य बन जाएँगे परन्तु सुन्दर नहीं बन सकते।

1. विसाहा–प्रभु नाम की दौलत कमाते हैं।

3. नवयुवकों के पतित होने में स्त्रियों का योगदान

नवयुवकों को केश रहित करने में स्त्रियों का भी बहुत बड़ा योगदान सुनने में आया है ; याद रखें, रहितहीनता करने वाला और रहितहीनता करवाने वाला दोनों बराबर के दोषी हैं। आजकल सुनने में आ रहा है कि नवयुवतियाँ अखण्ड स्वरूप वाले पति चुनने के स्थान पर अखण्ड स्वरूप को तिलांजली देने वाले नवयुवकों को अधिमान दे रही हैं, जो लड़कियों के लिए बहुत ही अभाग्यपूर्ण रुझान है। सोचिए ! जो नवयुवक अपने परमात्मा की अवज्ञा कर सकता है, वह आपका कितनी देर साथ निभाएगा। जो बच्चा अपने गुरु के आदेश को नहीं मानता। याद रखें ! समय आने पर वह आपकी (बात) भी नहीं सुनेगा। यदि आप नवयुवकों को अपनी विरासत से तोड़ने का कारण बन रही हैं तो याद रखें गुरु-आदेश की उल्लंघना करने तथा प्रभु से विमुख होने जैसे कर्म की सजा आपको भी बराबर ही भुगतनी पड़ेगी। जब अपनी विरासत में टूटे हुए पतियों से आपका वास्ता पड़ेगा, वह शराब पीकर, जुआ खेल कर तथा अन्य विकारपूर्ण कर्म करके घर आएँगे तो आप उनका विरोध करेंगी। वे इसके एवज में आपको गालियाँ देंगे, बुरा-भला कहेंगे, मार-कुटाई करेंगे। तब केवल आप पश्चाताप ही कर पाएंगी, कुछ संवरेगा नहीं। अभी वक्त है संभलने का। यदि आपने अपनी विरासत की स्वामिनी बनना है तो याद रखें– माता साहिब कौर, माता सुन्दर कौर, माता भाग कौर, बीबी शरण कौर के कारनामों को। याद कीजिए उन माताओं को जिन्होंने जेलों में कैद होकर सवा-सव मन पिसाई की, चप्पा-चप्पा (रोटी का एक चौथाई हिस्सा) रोटी तथा एक-एक पानी के प्याले पर दिन काट कर, बच्चों के टुकड़े होते देखे पर उनका विश्वास और दृढ़ता कम नहीं हुई। आज हम अल्पावधि (कम समय) के सुखों के लिए बिना किसी कष्ट के, स्वयं तो क्या दूसरों को भी धर्म-कर्म से गिराने की भागीदार बन रही हैं।

आज माताओं की लोरियों में से गुरुवाणी लुप्त हो चुकी है। संध्या के समय गुरु-साखियां तथा सिक्ख इतिहास अपने बच्चों को सुनाने का

समय माताओं के पास नहीं रहा। जिसके कारण हमारे नवयुवकों की यह दुर्दशा हो रही है। जब वृक्ष की जड़ को पानी नहीं मिले तो वह बढ़-फूल कैसे सकता है ?

आज बहुत कम माँ-बाप हैं जो अपने बच्चों के धार्मिक संस्कार बनवाते हैं, बहुतायत में बच्चों के संस्कार कार्टून की कहानियों से, अभिनेताओं के एक्शन से, बेहूदा गीत गाने वालों के शब्दों से बन रहे हैं। दोष बच्चों का नहीं, दोष हैं माता-पिता का, जिन्होंने माया (धन-दौलत) की दौड़ इतनी तेज़ कर ली है कि उनके पास अपने बच्चों के पास दस मिन्ट बैठने का भी समय नहीं है। इस असावधानी की सजा माता-पिता और बच्चे दोनों ही भुगत रहे हैं और आगे भी भोगेंगे। कब तक ? जब तब हम अपने बच्चों के गुरुमति संस्कार बनाने के लिए प्रयत्नशील नहीं होते।

गुरुमति संस्कार बनने हैं सतिगुरु की वाणी से जुड़कर। गुरुमति संस्कार बनने हैं अपने गौरवपूर्ण स्वर्णिम इतिहास को पढ़ सुन कर। गुरुमति संस्कार बनते हैं – श्रेष्ठ भले मानसु की संगति करने से।

आज जरूरत हैं हम स्वयं और अपने बच्चों को भी वाणी और गुर-सिक्खी वेशभूषा के साथ जोड़ कर अपने गौरवपूर्ण इतिहास को सुनें और पढ़े, कुसंगति का त्याद करके सत्संगति करें। फिर कोई वजह नहीं कि हम अपनी विरासत के साथ न जुड़ सकें, अवश्य जुड़ेंगे।

4. विदेश जाने के बहाने केशों को तिलांजली

आजकल बहुत से बच्चे विदेशों में रोजी रोटी कमाने के लिए जाने का बहाना बनाकर केशों को कटवा रहे हैं। वास्तव में ये नवयुवकों की मानसिक दुर्बलता के प्रदर्शन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जब आज हम विदेशों की तरफ दृष्टि दौड़ाते हैं तो पंजाब से अधिक सिक्खी की प्रफुल्लता विदेशों में नजर आती है। अमरीका, इंग्लैंड तथा कैनेडा आदि किसी भी देश में चले जाएं, सिक्खों ने अपने परिश्रम और सूझ-बूझ से निम्न स्तर से उच्च स्तर तक अपनी धाक जमाई हुई है। ट्रांसपोर्ट और खेती-बाड़ी से लेकर, सरकारी और गैर-सरकारी उच्च पदों पर अखंड वेश (सूरत) और

सिक्खी स्वरूप वाले काबिज है। विदेशों में तो सिक्खों ने राजनैतिक क्षेत्र में भी अत्यंत उच्च आदर-सत्कार और सम्मान प्राप्त किया है। सिक्खी स्वरूप आज किसी पहचान का मोहताज नहीं है। अपने देश में भी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, फौजी जरनैल, प्लैनिंग कमिश्नर आदि के उच्च पद सिक्खी स्वरूप वालों ने प्राप्त किये हैं।

अमरीका में 11 सितम्बर की घटना के बाद कुछेक शरारती और अज्ञानी लोगों ने सिक्खों को मुस्लिम समझ कर शरारतें की परन्तु कुछेक घटनाओं के बाद अमरीका सरकार ने सिक्खों की अलग पहचान को दर्शाने वाला एक कैलण्डर समाचार पत्रों और सभी सरकारी दफ्तरों, पुलिस स्टेशनों पर लगाया, जिसमें अखंड सूरत पटका बाधने वाले बच्चे से लेकर दस्तारधारी सिक्ख, खुली दाढ़ी और दस्तारधारी औरतों की तस्वीरें प्रकाशित की गई थीं। उस कैलंडर में किसी भी क्लीन शेव अथवा दाढ़ी काटने वाले को सिक्ख नहीं दर्शाया गया था। यहाँ सोचने वाली बात है, अखंड सूरत (स्वरूप) धारण करने वाले तो सिक्ख धर्म के अंग माने गये हैं, दाढ़ी काटने वालों को सरकार ने सिक्ख ही नहीं माना। उनके लिए तो पुरानी लोकोक्ति 'न घर के रहे न घाट के' ठीक लगती है। क्लीन शेव वाले सिक्ख कहलवाने वाले न हिन्दुओं और न मुस्लमानों में तथा न ही सिक्खों में शामिल किये जाते हैं। इस लिए क्लीन शेव वाले सिक्खों को लोकलाज का त्याग करके अपने घर वापिस चले आना चाहिए। अपनी विरासत से जुड़कर अपना इहलोक और परलोक सुधार लेना चाहिए।

5. अपने आप में हीन-भावना

कई बार हमारी नौजवान पीढ़ी यह प्रश्न भी उठाती है कि जब हमने बहुसंख्यक क्लीन शेव वाले मनुष्यों में रहना है, वे हमारी अलग अखंड सूरत देख कर हमसे घृणा करते हैं। यदि नवयुवकों की इस दलील को मान भी लिया जाए, दाढ़ी केश कटवा कर हजामत करवा लेने से भी घृणा और भेद-भाव को समाप्त नहीं किया जा सकता। दाढ़ी केशों से आगे, सफेद चमड़ी का भूरी चमड़ी से, सफेद या भूरी चमड़ी वाले का काली

चमड़ी वाले से भेद-भाव बना ही रहना है और बना हुआ है, तो फिर क्या हम ऐसी हालत में अपनी चमड़ी को भी शरीर से उतार देंगे अथवा स्किन ग्राफटिंग करवा कर अपनी चमड़ी का रंग बदल लेंगे, कदाचित् संभव नहीं होगा। चमड़ी के बाद बोली के भेद-भाव शुरु हो जाएँगे। बात किसी भी किनारे नहीं लगेगी। घृणा या भेद-भाव वाली बात तो प्रत्येक देश में, प्रत्येक राज्य के लोग दूसरे राज्य के लोगों से किए जा रहे हैं। अंग्रेज़ स्वयं अपने लोगों से कर रहे है। घृणा अथवा भेद-भाव करना मनुष्य का स्वभाव है, जिसे बदला नहीं जा सकता।

याद रखिए, जिसने प्रभु की बख्शिश केश, दाढ़ी को तलाक दे दिया, समझो उसने प्रभु और गुरु को बेदावा दे दिया। गुरु के आदेशों से विद्रोही मनुष्य पर गुरु विश्वास नहीं करता। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का फरमान है कि जब तक सिक्ख प्रभु की बख्शिश केश और दाढ़ी की संभाल करके अखंड सूरत (स्वरूप) में संसार में विचरण करेगा, मैं उस सिक्ख को प्रभु का वफादार समझ कर अपना सारा तेज प्रदान करता रहूँगा परन्तु जिस दिन सिक्ख अपनी प्रभु प्रति वफादारी त्याग कर संसार के जन समुदाय में शामिल हो जाएगा, मेरा एतबार-भरोसा भी उस पर से समाप्त हो जाएगा। आप जी का कहना है–

जब लग खालसा रहै निआरा॥
तब लग तेज दीओ मैं सारा॥
जब इह गहे बिपरन की रीत॥
मै न करो इन की परतीत॥

आज आवश्यकता है प्रत्येक मनुष्य को अपनी विरासत से जुड़े रहने की, प्रभु तथा गुरु पर विश्वास करने की।

प्रभु की बख्शिश दाढ़ी केशों की धरोहर, जो परमेश्वर ने हमें प्रदान की है, उस बख्शिश से बेईमानी (अमानत में खयानत) मत करें, नहीं तो विश्वासहीन (अविश्वसनीय) बन जाएँगे। अविश्वसनीय पर कोई भी विश्वास नहीं करता, इसलिए हमें सदैव गुरु अर्जुन देव जी का फरमान याद रख कर अपने भरोसे को खंडित नहीं करना चाहिए। जो अपने हाथों से अपना विश्वास गँवा देता है, सतिगुरों को फरमान है–

अपनी परतीति आप ही खोवै॥

बहुरि उस का बिस्वासु न होवै॥ *सुखमनी मः ५ (पृष्ठ २६८)*

अविश्वसनीय मनुष्य पर कोई भी विश्वास नहीं करता, बल्कि उसको हरेक व्यक्ति बुरी नजर से देखता है। गुरुवाणी का फरमान है–

भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु॥

(सिरी राग मः १, पृष्ठ ६१)

और–

भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै॥

(प्रभाती मः १, पृष्ठ 1344)

ईश्वर और गुरु सम्पूर्ण है, वे कभी भूल नहीं कर सकते। हमें गुरुवाणी की इन पंक्तियों पर विश्वास करके ईश्वर की सम्पूर्णता में विश्वास रख कर '**गुरसिख मीत चलहु गुर चाली**' को धारण करके अपने क्षण भंगुर जीवन यात्रा को सफल करना चाहिए। ईश्वर और गुरु से विमुख होकर अपने इहलोक और परलोक नहीं बिगाड़ने चाहिए।

प्रचार के ढंगों से परिवर्तन की आवश्यकता

आज हमें उन नवयुवकों तक पहुँचने की अत्यावश्यकता है, जो किसी भी कारणवश अपनी विरासत और सभ्याचार से टूट कर दिशाहीन होकर मनमर्जी का जीवन व्यतीत करते हुए भ्रम में फँसे, भटक रहे हैं। इन जड़ों तक डूबे नवयुवकों को वापिस लौटाने के लिए हमें प्रचार के ढंगों में परिवर्तन लाने की जरूरत है। प्रचार में प्यार को शामिल करने की आवश्यकता है। पतित नवयुवकों को शब्दों के तीखे तीर मारने की अपेक्षा प्यार से गले से लगाकर उनसे अपनत्व को प्रकटाया करके, उनकी पीठ पर प्यार से थपकियाँ देकर उनकी भलाई के लिए गुरु का वास्ता देकर मार्ग दिखाने की जरूरत है। जैसे कि भाई वीर सिंह जी ने 1913 ई. की सिक्ख ऐजूकेशन कानफ्रंस में प्रो. पूर्ण सिंह को प्यार से गले लगाकर उनको पुनः गुरु-सिक्खी की मुख्यधारा में शामिल करने में सफलता प्राप्त की थी।

घटना इस प्रकार घटी, प्रो. पूर्ण सिंह जो बचपन से अत्यंत नेक गुरुमति संस्कारों को धारण किये हुए थे। भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप जी प्रायोगिक रसायन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए जापान देश चले गये, जहाँ आप स्वामी रामतीर्थ जी के विचारों से प्रभावित होकर वेदांती बन गये। सिक्ख कौम ने प्रोफेसर से नाता तोड़ लिया। समय आया जब चीफ खालसा दीवान ने स्यालकोट में 1913 ई. को सिक्ख शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में वक्ताओं का चुनाव करते समय प्रोफैसर साहिब का नाम भी सामने आया। धर्म को पीठ दिखाने के कारण काफी समय पक्षधर और विपक्षियों में विचार-चर्चा चली। आखिर में यह निर्णय हुआ कि पूर्ण सिंह विचारवान् विद्वान् मनुष्य था, स्वामी जी के विचारों से प्रभावित होकर कुमार्गी हो गया है। गुरु सिखी संस्कार अभी भी उसके अन्दर सम्माहित हैं। हमें पूर्ण सिंह को बुला कर उसको अपने विचार प्रकट करने का अवसर अवश्य देना चाहिए। सहमति होने के पश्चात् पूर्ण सिंह को सम्मेलन में भाषण देने का निमंत्रण पत्र भेज दिया गया।

सम्मेलन में प्रो. पूर्ण सिंह जी ने गुरु सिक्खी सिद्धान्तों पर अत्यंत प्रभावशाली भाषण दिया। भाषण समाप्ती पर वे आप भाई वीर सिह के पास आकर बैठ गए।

भाई वीर सिंह जी ने प्रोफैसर साहिब की पीठ और सिर पर हाथ फेर कर पूर्ण सिंह से विनम्रता और प्यार से कहा– पूर्ण सिंह ! मैंने तो सुना था कि जो प्रभु की बख्शिश रोमों को कटवाते हैं, उनके बाल बहुत खुरदरे (कठोर) हो जाते हैं परन्तु आप के बाल तो काटने पर भी अत्यंत कोमल हैं। आप इन्हें क्या लगाते हैं? इनती बात कहने के साथ ही अपने घर रात का प्रसादा (भोजन करने) के लिए निमंत्रण दिया।

शाम का समय आया, दोनों ने इकट्ठे लंगर छक्का, प्रसादा छकने (भोजन करने) के बाद काफी समय गुरुमति विचार चलते रहे। क्या विचार हुए ? ये वही जानते हैं। प्रोफैसर पूर्ण सिंह की पत्नी बीबी माया देवी लिखती हैं, कि जब प्रोफैसर साहिब घर पहुँचे तो वे अपने मुँह में कुछ गुनगुना रहे थे। थैला रखने के बाद उनके प्रथम शब्द थे– माया देवी! मैं आज से पुनः कभी केश नहीं कटवाउंगा। मायादेवी जी लिखती हैं कि मैंने कहा– आप जैसे हैं वैसे ही ठीक हैं। आपने पहले एक बार गलती की थी, दस वर्ष तक कौम ने आपको मुँह नहीं लगाया। अब अगर फिर गलती कर ली तो पता नहीं कितना समय पुनः सन्ताप भोगना पड़ेगा प्रो. पूर्ण सिंह जी ने अत्यंत प्रेमभरे मन से दृढ़ता के साथ कहा– माया देवी ! जिन केशों पर भाई वीर सिंह जैसे गुरुमुख का हाथ फिर गया है, अब इन केशों के ऊपर नाई का हाथ नहीं फिर सकता। आपने (प्रो. पूर्ण सिंह) पुनः अखंड सूरत (स्वरूप) बना कर गुरु की दृष्टि में स्वीकृत होकर गुरुमति को धारण करके गुरुसिक्खी के अनूठे प्रेम और आनंद को भोगा। उस आनंद और गुरुसिखी की रहस्यता को कविता और गद्य में अंकित करके अनेक भूले भटके जीवों को सही जीवन दिशा देने का माध्यम बने और साहित्य के माध्यम से आज भी बन रहे हैं। याद रखने वाली बात है कि दुत्कारा हुआ मनुष्य और भी दूर हो जाता है, पर प्रेम करने से मनुष्य प्रेरित हो जाता है। आज जरूरत है नवयुवक को प्यार

की गलबाहीं में लेकर गुरु अर्जुन देव जी द्वारा प्रदान किए शस्त्रों से सुधार कर सही गुरुमति मार्ग-दर्शन देने की। सतिगुरों के शस्त्र हैं–

[1]गरीबी गदा हमारी॥ खन्ना सगल रेनु छारी॥
इसु आगै को न टिकै बेकारी॥ गुर पूरे एह गल सारी॥१॥

सोरठि मः ५ (पृष्ठ ६२८)

भूल चूक की क्षमा

वाहिगुरु जी का खालसा॥
वाहिगुरु जी की फतहि॥

---

1. नम्रता हमारी गदा है, सभी के चरणों की धूल बनना हमारा खंडा है। पूरे गुरु ने हमें यह बात समझा दी है कि विनम्रता-प्यार के शस्त्र के आगे कोई पाप-कर्म करने वाला ठहर नहीं सकता।

गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा

गढ़दीवाला (होशियारपुर)

द्वारा

प्रकाशित पुस्तक सूची

1.	से किनेहिआ ?	(पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी)
2.	शब्द गुरु पीरा	(पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी)
3.	गुरु ग्रंथ साहिब दर्शन	(पंजाबी, हिन्दी)
4.	गुरुमति के पांधी	(पंजाबी)
5.	नाम क्या है ?	(पंजाबी)
6.	आत्मा क्या है ?	(पंजाबी)
7.	रागमाला मंडन प्रबोध	(पंजाबी)
8.	श्री गुरु अर्जुन देव जी की चौथी शहीदी शताब्दी	(पंजाबी)
9.	मनुष्यता के दुश्मन नशे	(पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी)
10.	प्रभु बख्शिश केश	(पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी)
11.	सामाजिक कुरीतियाँ	(पंजाबी)
12.	हमारा विरसा और स्वै-पड़चौल	(पंजाबी)
13.	जैसी संगति तैसी रंगत	(पंजाबी)
14.	कॉस्मिक डिविनिटी ऑफ आदि गुरु ग्रंथ साहिब	(अंग्रेज़ी)
15.	मनुष्य जन्म और गुरु की महानता	(पंजाबी)

प्रचार के ढंगों से परिवर्तन की आवश्यकता

आज हमें उन नवयुवकों तक पहुँचने की अत्यावश्यकता है, जो किसी भी कारणवश अपनी विरासत और सभ्याचार से टूट कर दिशाहीन होकर मनमर्जी का जीवन व्यतीत करते हुए भ्रम में फँसे, भटक रहे हैं। इन जड़ों तक डूबे नवयुवकों को वापिस लौटाने के लिए हमें प्रचार के ढंगों में परिवर्तन लाने की जरूरत है। प्रचार में प्यार को शामिल करने की आवश्यकता है। पतित नवयुवकों को शब्दों के तीखे तीर मारने की अपेक्षा प्यार से गले से लगाकर उनसे अपनत्व को प्रकटाया करके, उनकी पीठ पर प्यार से थपकियाँ देकर उनकी भलाई के लिए गुरु का वास्ता देकर मार्ग दिखाने की जरूरत है। जैसे कि भाई वीर सिंह जी ने 1913 ई. की सिक्ख ऐजूकेशन कानफ्रंस में प्रो. पूर्ण सिंह को प्यार से गले लगाकर उनको पुनः गुरु-सिक्खी की मुख्यधारा में शामिल करने में सफलता प्राप्त की थी।

घटना इस प्रकार घटी, प्रो. पूर्ण सिंह जो बचपन से अत्यंत नेक गुरुमति संस्कारों को धारण किये हुए थे। भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप जी प्रायोगिक रसायन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए जापान देश चले गये, जहाँ आप स्वामी रामतीर्थ जी के विचारों से प्रभावित होकर वेदांती बन गये। सिक्ख कौम ने प्रोफेसर से नाता तोड़ लिया। समय आया जब चीफ खालसा दीवान ने स्यालकोट में 1913 ई. को सिक्ख शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में वक्ताओं का चुनाव करते समय प्रोफैसर साहिब का नाम भी सामने आया। धर्म को पीठ दिखाने के कारण काफी समय पक्षधर और विपक्षियों में विचार-चर्चा चली। आखिर में यह निर्णय हुआ कि पूर्ण सिंह विचारवान् विद्वान् मनुष्य था, स्वामी जी के विचारों से प्रभावित होकर कुमार्गी हो गया है। गुरु सिखी संस्कार अभी भी उसके अन्दर सम्माहित हैं। हमें पूर्ण सिंह को बुला कर उसको अपने विचार प्रकट करने का अवसर अवश्य देना चाहिए। सहमति होने के पश्चात् पूर्ण सिंह को सम्मेलन में भाषण देने का निमंत्रण पत्र भेज दिया गया।

सम्मेलन में प्रो. पूर्ण सिंह जी ने गुरु सिक्खी सिद्धान्तों पर अत्यंत प्रभावशाली भाषण दिया। भाषण समाप्ती पर वे आप भाई वीर सिह के पास आकर बैठ गए।

भाई वीर सिंह जी ने प्रोफैसर साहिब की पीठ और सिर पर हाथ फेर कर पूर्ण सिंह से विनम्रता और प्यार से कहा– पूर्ण सिंह ! मैंने तो सुना था कि जो प्रभु की बख्शिश रोमों को कटवाते हैं, उनके बाल बहुत खुरदरे (कठोर) हो जाते हैं परन्तु आप के बाल तो काटने पर भी अत्यंत कोमल हैं। आप इन्हें क्या लगाते हैं? इनती बात कहने के साथ ही अपने घर रात का प्रसादा (भोजन करने) के लिए निमंत्रण दिया।

शाम का समय आया, दोनों ने इकट्ठे लंगर छक्का, प्रसादा छकने (भोजन करने) के बाद काफी समय गुरुमति विचार चलते रहे। क्या विचार हुए ? ये वही जानते हैं। प्रोफैसर पूर्ण सिंह की पत्नी बीबी माया देवी लिखती हैं, कि जब प्रोफैसर साहिब घर पहुँचे तो वे अपने मुँह में कुछ गुनगुना रहे थे। थैला रखने के बाद उनके प्रथम शब्द थे– माया देवी! मैं आज से पुनः कभी केश नहीं कटवाउंगा। मायादेवी जी लिखती हैं कि मैंने कहा– आप जैसे हैं वैसे ही ठीक हैं। आपने पहले एक बार गलती की थी, दस वर्ष तक कौम ने आपको मुँह नहीं लगाया। अब अगर फिर गलती कर ली तो पता नहीं कितना समय पुनः सन्ताप भोगना पड़ेगा प्रो. पूर्ण सिंह जी ने अत्यंत प्रेमभरे मन से दृढ़ता के साथ कहा– माया देवी ! जिन केशों पर भाई वीर सिंह जैसे गुरुमुख का हाथ फिर गया है, अब इन केशों के ऊपर नाई का हाथ नहीं फिर सकता। आपने (प्रो. पूर्ण सिंह) पुनः अखंड सूरत (स्वरूप) बना कर गुरु की दृष्टि में स्वीकृत होकर गुरुमति को धारण करके गुरुसिक्खी के अनूठे प्रेम और आनंद को भोगा। उस आनंद और गुरुसिखी की रहस्यता को कविता और गद्य में अंकित करके अनेक भूले भटके जीवों को सही जीवन दिशा देने का माध्यम बने और साहित्य के माध्यम से आज भी बन रहे हैं। याद रखने वाली बात है कि दुत्कारा हुआ मनुष्य और भी दूर हो जाता है, पर प्रेम करने से मनुष्य प्रेरित हो जाता है। आज जरूरत है नवयुवक को प्यार

ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਸਾਹਿਬ ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਚਾਰ ਹਿਤ ''ਮੋਖ ਰਹਿਤ'' ਵੰਡੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਤੇ ਟ੍ਰੈਕਟਾਂ ਦਾ ਵੇਰਵਾਂ

1.	ਸੋ ਕਿਨੇਹਿਆ ?	(ਪੰਜਾਬੀ, ਹਿੰਦੀ ਅਤੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ)
2.	ਸਬਦੁ ਗੁਰੂ ਪੀਰਾ	(ਪੰਜਾਬੀ, ਹਿੰਦੀ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ)
3.	ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦਰਸਨ	(ਪੰਜਾਬੀ, ਹਿੰਦੀ)
4.	ਗੁਰਮਤਿ ਦੇ ਪਾਂਧੀ	(ਪੰਜਾਬੀ)
5.	ਨਾਮ ਕੀ ਹੈ ?	(ਪੰਜਾਬੀ
6.	ਆਤਮਾ ਕੀ ਹੈ ?	(ਪੰਜਾਬੀ)
7.	ਵਰਨਮਾਲਾ ਮੰਡਲ ਪ੍ਰਬੰਧ	(ਪੰਜਾਬੀ)
8.	ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਛੋਡਿ ਕਾਹੇ ਬਿਖ ਖਾਇ	(ਪੰਜਾਬੀ)
9.	ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਚੌਥੀ ਸ਼ਹੀਦੀ ਸ਼ਤਾਬਦੀ	(ਪੰਜਾਬੀ)
10.	ਮਨੁੱਖਤਾ ਦੇ ਦਸ਼ੁਮਨ ਨਸ਼ੇ	(ਪੰਜਾਬੀ, ਹਿੰਦੀ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ)
11.	ਪ੍ਰਭੂ ਬਖ਼ਸ਼ਿਸ ਕੇਸ	(ਪੰਜਾਬੀ, ਹਿੰਦੀ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ)
12.	ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਰੀਤੀਆਂ	(ਪੰਜਾਬੀ)
13.	ਸਾਡਾ ਵਿਰਸਾ ਅਤੇ ਸ੍ਵੈ-ਪੜਚੋਲ	(ਪੰਜਾਬੀ)
14.	ਜੈਸੀ ਸੰਗਤਿ ਤੈਸੀ ਰੰਗਤ	(ਪੰਜਾਬੀ)
15.	Cosmic Divinity of Adi Guru Granth Sahib	(English)
16.	ਐਸੇ ਕਾਹੇ ਭੂਲਿ ਪਰੇ	(ਪੰਜਾਬੀ)